वाक्य का लक्षण

क्रिया और कारक इत्यादि से युक्त पदसमूह वाक्य कहलाता है। दूसरे शब्दों में क्रिया के साथ कर्ता-करणादि की उपस्थिति से युक्त पद-समूह वाक्य कहलाता है। वाक्य की परिभाषा के अनुरूप महर्षि पतञ्जलि ने इसके पाँच लक्षण निर्धारित किए हैं–

(i) **एकतिङ-एकं क्रियापदमपि वाक्यमस्ति**, अर्थात् एकमात्र क्रियापद भी पूर्ण वाक्य है, जैसे–गच्छ–जाओ, पिब–पीओ, पश्य–देखो, आगच्छतु–आएँ, तिष्ठन्तु–बैठें इत्यादि।

(ii) आख्यातं साव्ययकारक विशेषणं वाक्यम्-अव्यय-कारक-विशेषणैः सहितं क्रियापदं वाक्यम्। अर्थात् कारक और विशेषण से संबद्ध क्रियापद भी वाक्य है। जैसे–अद्य नूतनं गृहं गमिष्याम्यहम्।

(iii) सक्रिया विशेषणं च–क्रिया-विशेषण–सहित क्रियापदं वाक्यम् अर्थात् क्रिया–विशेषण–सहित क्रियापद एक पूर्ण वाक्य होता है। जैसे–शनैः शनैः आगच्छतु।

(iv) आख्यातं सविशेषणम्–केवल विशेषण–युक्त क्रियापद भी एक वाक्य होता है। यथा–सुष्ठु लिखति। अति वदति। बहु भाषते।

(v) संज्ञा पदं च–क्रियापद-रहितं संज्ञापदमपि वाक्यम्। क्रियापद-रहित केवल संज्ञापद भी एक पूर्ण वाक्य होता है। जैसे, तर्पणम्, पार्वणम्, पिण्डीम्।

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ के मतानुसार, '**वाक्यं स्यात् योग्यता-आकांक्षा-आसक्ति युक्तः पदोच्चयः।**'

अर्थात् योग्यता, आकांक्षा, आसक्तियुक्त पदसमूह ही वाक्य है। जैसे–

शून्यं वासगृहं विलोक्य शयनादुत्थाय किञ्चिच्छनै
निद्राव्याजमुपागतस्य सुचिरं निर्वर्ण्य पत्युर्मुखम्।
विस्रब्धं परिचुम्ब्य जातपुलकामालोक्य गण्डस्थलीं
लज्जानम्रमुखी प्रियेण हसता बाला चिरं चुम्बिता।

आचार्य वात्स्यायन के अनुसार-

पदसमूहो वाक्यं अर्थसमापत्तौ। अर्थात् अर्थ-प्राप्ति अथवा सार्थक प्रयोग के लिए व्यवहृत पदसमूह वाक्य कहलता है।

'शब्दशक्तिप्रकाशिका' के रचयिता के अनुसार-

मिथः साकांक्षशब्दस्य व्यूहो वाक्यम्। (श.प्र.-13)

अर्थात् साकांक्ष शब्दसमूह ही वाक्य है।

मीमांसक जैमिनि के अनुसार,

अर्थैकत्वादेकं वाक्यं साकाक्षं चेत्। (मीमांसासूत्रम्-2/1/46)

अर्थात् अर्थ के एकल से साकांक्ष पदसमूह वाक्य कहलाता है।

वाक्य के भेद

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से विविध भाषाओं में उपलब्ध वाक्यों को पाँच भागों में बाँटा गया है–

(क) आकृतिमूलक (ख) रचनामूलक
(ग) अर्थमूलक (घ) क्रियामूलक और
(ङ) शैलीमूलक।

(क) आकृतिमूलक : ये वाक्य प्रकृति-प्रयोग-सम्बन्धी तत्वों पर आधारित होते हैं। ये चार प्रकार के हैं–

(i) अयोगात्मक-जिस वाक्य में केवल प्रकृति ही होता है और वही सभी शब्दों का कार्य संपादित करता है। जैसे–
नी ता वो (चीनी)
त्वां मां हन्सि (संस्कृत)
वो ता नी (चीनी)
अहं त्वां हन्मि। (संस्कृत)

(ii) श्लिष्टयोगात्मक-वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।

(iii) अश्लिष्टयोगात्मक-
एलिमडेकि। (तुर्की)
मम हस्ते अस्ति। (संस्कृत)

(iv) प्रश्लिष्ट योगात्मक-
मकुज्जे। (गुजराती)
मया इदं कथितं यत्। (संस्कृत)
सुनले हलीह। (भोजपुरी)
मया श्रुतम्। (संस्कृत)

(ख) रचनामूलक-

रचनामूलक वाक्य तीन प्रकार के होते हैं–

(I) सामान्य वाक्य -अहं पुस्तकं पठामि।

(II) मिश्रवाक्य-यस्यास्ति वित्तं, स नरः कुलीनः।

(III) संयुक्त वाक्य-यदाहं गुरु गृहं प्राप्तम्, तदा स स्नानार्थं नदीं गतः आसीत्।

(ग) अर्थमूलक वाक्य-

अर्थ-भेद या भाव-भेद से वाक्य आठ प्रकार के हैं-

(i) विधिवाक्य-प्रणवः वेदं पठति।

(ii) निषेधवाक्य-प्रभवः मिथ्या न वदति।

(iii) प्रश्नवाक्य-किम् प्रज्ञा सत्यं वदति।

(iv) अनुज्ञावाक्य-त्वं गुरुम् प्रणम।

(v) संदेहवाक्य-आशास्ये प्रणवः पठन् भविष्यति।

(vi) इच्छार्थकं वाक्य-कल्याणं भवतु।

(vii) संकेतार्थक वाक्य-यदि त्वं पठिष्यसि, तर्हि परीक्षाया-मुत्तीर्णमपि भविष्यसि।

(viii) विस्मयार्थकं वाक्य-राम! राम! कृत्यं कृतम्।

(घ) क्रियामूलक वाक्य-क्रियामूलक वाक्य दो प्रकार के होते हैं-(i) क्रिया-सहित और (ii) क्रिया-रहित।

(i) क्रिया-सहित वाक्य-कर्तृ-कर्म-भेद से ये तीन प्रकार के होते हैं-

(A) कर्तृवाच्य-प्रणवः पुस्तकम् पठति।

(B) कर्मवाच्य-प्रभवेन ग्रंथः पठ्यते।

(C) भाववाच्य-प्रज्ञया दृश्यते।

(ii) क्रिया-रहित वाक्य-यह पाँच प्रकार के होते हैं-

(A) प्रवचनमूलक-इदं मम गृहम्।

(B) प्रश्नमूलक-कुतः? -पाटलिपुत्रतः।

(C) मुहावरामूलक-प्रज्ञाहीनः अन्ध एव।
गुणाः पूजास्थानम्।

(d) समाचारमूलक-देशे दुर्भिक्षम्।

(e) विस्मयादिमूलक-अग्निः! अग्निः!, भूकम्प! भूकम्प!, चौरः! चौरः!

(ङ) शैलीमूलक वाक्य-शिथिल, समीकृत और आवर्तक भेद से यह वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

(a) शिथिल वाक्य-आसीदेकः राजा दशरथः

(b) समीकृत वाक्य-यतो धर्मस्ततो जयः, यस्यार्थाः तस्य मित्राणि, धर्मो रक्षति रक्षतिः।

(c) आवर्तक वाक्य-यदि वयं सुखमिच्छामः, मानवमूल्यान-वबोधितुम् इच्छामः, उन्नतिपथमवाप्तुमिच्छामः, देशसेवाव्रतमंगीकर्तुमिच्छामः, तर्हि अस्माभिः भारतीया-संस्कृतिः अवश्यमेव अङ्गीकरणीया।